डॉ॰ किरण माला

संस्कृत विभाग

B॰A॰ part III Hons॰

समास

अव्ययीभाव समास :

सूत्र - **<u>अव्ययीभावे चाऽकाले :</u>** अगर कालवाचक उतरपद परे न हो ,तो अव्ययीभाव समास मे सह के स्थान पर स का आदेश होता है । उदा॰ <u>सह हरि</u> इस उदाहरण मे उत्तर पद हरि कालवाचक नहीं है अत:सह के स्थान पर प्रकृत सूत्र से स होकर - <u>सहरि</u> रूप सिद्ध होता है ।

- **आनुपूव् र्य(क्रम) अर्थ मे - उदा॰ <u>अनुज्येष्ठम्</u>** अनुपूर्व्येण -(ज्येष्ठ के क्रम से) आनुपूव् र्य मे वर्तमान अनु अव्यय का सुबंत ज्येष्ठ के साथ समास हुआ ।
- **यौगपद्य (एक साथ)** चक्रेण युगपत इस विग्रह मे यौगपद्य अर्थ मे वर्तमान सह अव्यय का सुबंत चक्रेण के साथ समास होकर सहचक्र रूप बनता है। सह के स्थान पर स आदेश होकर सचक्र--, सचक्रम् रूप सिद्ध होता है
- **सादृश्य -उदा॰ ससखि** स्दृश: सख्या इस विग्रह मे **सादृश्य** अर्थ मे वर्तमान सह अव्यय का सुबंत सख्या के साथ समास हुआ। सह के स्थान पर स आदेश होकर ससखि रूप सिद्ध होता है ।
- **संपत्ति अर्थ में उदा॰ सक्षत्रम्** क्षत्राणाम् संपत्ति इस विग्रह मे संपत्ति अर्थ मे वर्तमान सह अव्यय का क्षत्राणाम् सुबंत के साथ समास हुआ और सह के स्थान पर स आदेश होकर **सक्षत्रम्** रूप सिद्ध हुआ ।

- **साकल्य अर्थ मे- उदा॰ सतृणम्** तृणम् अपि अपरित्यज्य इस विग्रह मे साकल्य अर्थ मे वर्तमान सह अव्यय का सुबंत तृण के साथ समास होकर, सह के स्थान पर स आदेश होकर सतृणम् रूप सिद्ध हुआ है ।
- **अन्त अर्थ मे- उदा॰ साग्नि** अग्निग्रंथपर्यन्तम् इस विग्रह मे अन्त अर्थ मे वर्तमान सह अव्यय का सुबंत अग्निना के साथ समास होकर सह अग्नि - साग्नि रूप सिद्ध होता है।

अव्ययम् विभक्ति॰ -------- सूत्र की व्याख्या समाप्त हुई ।

सूत्र :

<u>नदीभिश्च</u> : वार्तिक - समाहारे चायमिष्यते। पञ्चगङ्गम् ,द्वियमुनम् ।

अर्थ - नादियों के साथ संख्यावाची शब्द का समास होता है । उपरोक्त वार्तिक के अनुसार ये समास समाहार अर्थ मे होता है ।

उदा॰ - पञ्चगङ्गम् , (पंचानाम् गंगानाम् समाहार:) द्वियमुनम् ।

<u>अव्ययी भावे शरत्प्रभृतिभ्यै</u> : अव्ययीभाव समास मे शरद आदि से समासान्त टच्

(अ)प्रत्यय होता है । उदा॰ - शरद : समीपम् =उपशरदम् ।

यहाँ समीप अर्थ मे वर्तमान उप अव्यय का सुबंट शरद के साथ समास अव्ययम् विभक्ति ॰ से समास होकर -उपशरद् रूप बना । पुन : प्रकृत सूत्र से टच् प्रत्यय लगकर -

उपशरद्+अ = उपशरद हुआ। एक वचन मे उपशरदम् रूप सिद्ध हुआ । इसी प्रकार उपजरसम् भी बंता है ।

<u>अनश्च</u> : इस सूत्र के अनुसार परे मे तद्धित के होने पर नकारान्त भसंज्ञक अंग के टि का लोप होता है । उदा॰ -उपराजन् अ यहाँ उपराजन् मे अन् टि संज्ञक है और उससे परे टच्(अ) तद्धित है अत : अन का लोप हो जाएगा -उपराज् अ = उपराज रूप बनने पर विभक्ति लग कर उपराजम् रूप सिद्ध होता है ।

<u>नपुन्स्कादन्यतरस्याम् :</u> जिस अव्ययीभाव समास के अंत मे अन् अंत वाला नपुंसक लिंग हो वहाँ विकल्प से टच् प्रत्यय होता है । उदा॰ - चर्मन् ङस् उप =उपचर्मन् ,यहाँ चर्मन् नपुंसक लिंग है अत : टच् प्रत्यय होकर - उपचर्मन् अ ,टि लोप होकर और विभक्ति लगकर उपचर्मम् रूप सिद्ध होता है ।

<u>झय: -</u> झय प्रत्याहार का वर्ण जिस अव्ययी भाव समास के अंत मे हो वहाँ विकल्प से समासान्त टच् प्रत्यय होगा । उदा॰ सामिध् ङस् उप =उपसमिध्। टच् प्रत्यय होकर उपसमिध् अ = उपसमिध । विभक्ति लग कर उपसमिधम् रूप सिद्ध होता है ।